* श्रीः *

श्रीराष्ट्रालोकः

राष्ट्रभाषाऽनुवादसहितः

प्रणेता—

श्रीमान् अमृतवाग्भव आचार्यः

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

* श्रीः *

एक अत्यावश्यक निवेदन

इस ग्रन्थरत्नके प्रकाशनमें श्री पं० जटाशङ्करजी तथा श्री बा० जयजयरामजी इन दोनों सहृदय महोदयोंने पूर्ण आर्थिक सहायता प्रदान कर अत्यधिक प्रशंसनीय कार्य किया है।

विश्वहितैषी समस्त मानवसमाज उनकी इस उचित सेवाका पूर्ण समादर करेगा।

प्रकाशक—

श्रीस्वाध्यायसदन

श्रीमद्धर्माचार्यभगवत्पादप्रणीत—

श्रीपञ्चस्तवी

भगवती राजराजेश्वरी, त्रिपुरसुन्दरी श्रीमाताके अतीव सुन्दर पाँच स्तोत्र हैं। इनमें अनेक शास्त्रोंके गूढ़ रहस्य भरे पड़े हैं। इस श्रीपञ्चस्तवीके सानुभव पाठसे यथेष्ट फलसिद्धि होती है।

मूल्य विश्वोद्धार

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

* श्रीः *

महामहिम आचार्य-श्रीमद्-
अमृतवाग्भवप्रणीतः

श्रीराष्ट्रालोकः

राष्ट्रभाषानुवादसहितः

——:०:——

प्रकाशकः—
श्रीस्वाध्यायसदन

तृतीय वार ३०५० } वि० २००५ सं० { मूल्य ॥)

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

महामहिमश्रीमदमृतवाग्भवाचार्यप्रणीत

श्रीआत्मविलास

('सुन्दरी' राष्ट्रभाषाव्याख्यासहित)

मनुष्यमात्रके लिए परम कल्याणकारी व सन्मार्ग-प्रदर्शक यह वही अद्भुत आध्यात्मिक दार्शनिक ग्रन्थरत्न है जिसके प्रकाशित होते ही दार्शनिक जगत्में हलचलसी मच गई और सैकड़ों प्रतियां हाथों हाथ लग गईं। इस ग्रन्थ को पढ़नेसे स्थितप्रज्ञता प्राप्त होती है, चित्त शान्त होता है, संसार बाहर भीतर सम्पूर्णरूपसे आनन्दमय प्रतीत होता है। अतः यदि आप भी आत्मा क्या है ? परमात्मा क्या है ? ईश्वर जगदुत्पत्ति क्यों और किस प्रकार करता है ? हम क्या हैं और हमें क्या करना चाहिए ? दर्शन किसे कहते हैं ? उनका प्रारम्भ तथा अन्त कहाँ होता है ? उनकी उपपत्ति क्या है ? आदि आदि अध्यात्मिक गूढ़ रहस्योंसे भलीभाँति परिचित होकर आत्मसाक्षात्कार करना चाहते हैं तो इस ग्रन्थका अवश्य मनन कीजिए आपके सभी सन्देह दूर हो कर अद्भुत आनन्द प्राप्त होगा। मूल्य २) रु० मात्र मार्ग व्यय (पोस्टेज) पृथक्।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

निवेदन्

सारा संसार कल्याणको चाहता है। परन्तु बाह्य साधनोंसे किसीको पूर्ण कल्याण नहीं मिला। साथ ही यह भी देखा गया कि बाह्य साधनों द्वारा व्यावहारिक कल्याणको प्राप्त किये बिना पारमार्थिक कल्याण भी गगन कुसुमके समान केवल चर्चामें ही आया अनुभवमें नहीं। इसी कारण विश्वके वास्तविक कल्याणके लिए श्री १०८ श्रीमान् अमृतवाग्भवाचार्यजीने श्री वि० सं० १९९० में श्रीराष्ट्रालोकका निर्माण किया। वि० सं० १९९१ में मूलमात्र मुद्रण भी हुआ। यह ग्रन्थ संसारको व्यावहारिक स्वातन्त्र्यकी प्राप्तिका मार्ग दिखाता है और साथ ही पारमार्थिक स्वातन्त्र्य की इच्छाको भी अङ्कुरित करता है। स्वातन्त्र्यका ही दूसरा नाम कल्याण है। स्वातन्त्र्य ही मोक्ष है और स्वातन्त्र्य ही हम सबका अन्तिम लक्ष्य है।

वि० सं० २००४ में राष्ट्रभाषानुवाद सहित श्रीराष्ट्रालोकका एक संस्करण प्रकाशित किया गया था। उस संस्करणके प्रकाशक स्यालकोट निवासी श्रीकस्तूरीलालजी आनन्द हैं। उसका सम्पादन श्री० पं० बलजिन्नाथजी शास्त्री एम. ए. एम. ओ. एल. ने किया था। अब यह तृतीय संस्करण प्रकाशित हो रहा है। इस ग्रन्थकी प्रशंसा भारतके प्रमुख पत्र पत्रिकाओंमें पर्याप्त हो चुकी है, तथा भारतीय प्रसिद्ध नेताओंने भी इसकी मुक्तकण्ठसे प्रशंसा की है। पुस्तक स्वयं अपनी योग्यता आपको बतलायेगी।

प्रकाशक—

श्रीस्वाध्यायसदन

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

॥ श्रीः ॥

श्रीराष्ट्रसञ्जीवन भाष्य

श्रीराष्ट्रालोककी १०८ कारिकाओं पर कई सौ पृष्ठोंमें । ईश्वरकी इच्छा होने पर अवश्य मुद्रित होगा । कारिकाएँ सूत्र रूपमें लिखी गई हैं । उनके रहस्योंका पूर्ण विश्लेषण इस भाष्यमें किया गया है ।

पाणिनीय व्याकरणमें जो स्थान पातञ्जल महाभाष्यका है तथा वेदान्तमें जो स्थान ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यका है वही स्थान राष्ट्रवादमें श्रीराष्ट्रसञ्जीवन भाष्यका है । राष्ट्रवादका कोई विषय ऐसा नहीं जिस पर इस भाष्यमें प्रकाश न डाला गया हो । राष्ट्रसञ्जीवन छपकर जगत्को एक नया प्रकाश देगा जिसकी सहायतासे राष्ट्रवादी राष्ट्रोंकी स्वतन्त्रताके योगक्षेमके मार्गको देख सकेंगे ।

इस ग्रन्थरत्नकी पूर्ण प्रशंसा करना साधारण काम नहीं । ग्रन्थका मुद्रण हो जाने पर विद्वान् लोग स्वयं अनुभव करेंगे । ग्रन्थकी महत्ता अनुभववेद्य ही है । कहने और सुननेकी वस्तु नहीं ।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

श्रीराष्ट्रालोकः

ऐन्द्रीं भूतिं नित्यां दत्त्वा शौक्लीं कीर्तिं विस्तार्यैषा ।
शक्तिं सौरीं पूर्तिं नीत्वा राष्ट्रं गौरीदङ् नः पायात् ॥

गुरुवर ! "इस महान् संसारका आरम्भ हो परिणाम हो अथवा विवर्त्त हो क्यों न हो कोई न कोई इसका आधार तो अवश्य है ही, तथा वह परिपूर्ण, नित्य समरस स्वयंसिद्ध ही है" यह आपका प्रतिपादित सिद्धान्त मैंने हृदयङ्गम कर लिया है। एक समय आत्मरहस्य समझाते हुए आपने कहा था कि "आत्मा पूर्ण स्वतन्त्र है और वही सम्पूर्ण कल्पनाओंको सत्ता, चित्ता तथा आनन्दता प्रदान करता है। वह पूर्ण स्वतन्त्र होनेके कारण ही अपनी इच्छासे अपने आत्मरूप रङ्गभूमिमें अनन्त जगन्नाटककी लीलाका निर्माण तथा उसके आनन्दका उपभोग करता रहता है। यही इस महान् संसारका परम आधार परमशिव हैं।" यह आत्मरहस्य भी मैंने आपके अनुग्रहसे अनुभूत कर लिया है। अब आज मैं इस आत्मकल्पित जगन्नाटकमें एक विशेष प्रकारकी सुव्यवस्थित सुन्दरता स्थापित करनेके विषयमें प्रश्न करनेकी इच्छा रखता हूँ। हे गुरुश्रेष्ठ ! इस इच्छाको भी आप ही पूर्ण कर सकते हैं।"

शिष्यके इस प्रकार प्रार्थना करने पर अत्यन्त सन्तुष्ट हो सद्गुरु कहने लगे—

"तात ! तुम जो भी प्रश्न करोगे उसका मैं पूर्ण समाधान करूंगा। वत्स ! तुम्हारा मन सदैव शिवसङ्कल्प करता है, तुम्हारी बुद्धि अत्यन्त निर्मल है, चित्त तुम्हारा पूर्ण सुदृढ़ है, तुम्हारा अहंभाव भी पूर्ण अहन्ता-

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

विमर्शसे आप्लावित हो रहा है, तथा पूर्ण अहम्महोरूप सामरस्यके आनन्दके उपभोगके लिये समुत्सुक है। मैं और तुम शरीरसे ही पृथक् से हो रहे हैं, और इस संसारमहानाटकमें अभिनय कर रहे हैं। चिरजीविन्! मैं अभिनवरमणीय, सच्चिदानन्दकन्द आत्मस्वरूप हूँ। प्रकाशविमर्शपूर्णसामरस्यात्मक, श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी राजराजेश्वरी परशिवाम्बा मेरा ही स्वरूप है। मैंने ही गुरु और शिष्यकी भूमिकाएँ एकसाथ ही ग्रहण करके 'समस्तशास्त्रावतरण'नाटक खेला है। यह नाटक मेरे स्वरूप जैसा ही अनाद्यनन्त है। यह समयसापेक्ष नहीं है। बताओ कौनसा रहस्य जानना चाहते हो? तुम मेरे परम प्रेमास्पद हो, मेरे हृदयकी ऐसी कोई भी गुप्त बात नहीं जो तुम्हें न दी जाए"।

शिष्य—"भगवन्! आपका महान् अनुग्रह है। ब्रह्माण्ड अनन्त हैं, उनकी कोई गिनती नही। एकैक ब्रह्माण्डमें कई कई लोक हैं। मैं तो आज भूलोकके मानवोंके सुव्यवस्थित शासनके विषयमें पूछ रहा हूं। मनुष्य लोकमें मनुष्य ही सर्व श्रेष्ठ कोटीका प्राणी है। वही सबका नर (नेता) है। वह अपने सम्पूर्ण लोकको किस सुव्यवस्थासे सुखी कर सकता है, यह बतानेकी आप कृपा करिये, कारण प्राणिमात्र सुखाभिलाषी हैं, और सुख सुव्यवस्थासे ही प्राप्त हो सकता है"

गुरु—"प्रिय शिष्य! तुम्हारा प्रश्न केवल प्राणियोंका ही नहीं भूतमात्रका उपकार करने वाला है। इसका उत्तर संक्षिप्त सारगर्भित तथा सम्पूर्ण शङ्काओंका निराकरण करने वाला ही दे रहा हूँ। सावधान हो कर ग्रहण करना। श्वेतवाराह कल्पके सातवें वैवस्वत मन्वन्तरके अठाईसवें कलियुगके ये मानव प्राणी अल्पायु, अल्पप्राण

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

तथा अल्पबुद्धि होनेके कारण विस्तृत ग्रन्थ धारण नहीं कर सकते। अतः इनके लिए संक्षिप्त ग्रन्थ ही होना चाहिये। वत्स! शासनसुव्यवस्था-के सम्बन्धमें तुम्हारी इच्छाकी पूर्तिके लिये ही "श्रीराष्ट्रालोक" नामक एक अत्यन्त सुन्दर ग्रन्थ मैंने लिखा था। इसका दूसरा नाम "व्यावहारिक मोक्षशास्त्र" है। इसमें एक सौ आठ सुन्दर कारिकाएँ हैं। तथा इस पर एक सुन्दर "श्रीराष्ट्रसञ्जीवन" नामक लगभग दशसहस्रश्लोक-परिमाणका भाष्य भी मैंने ही रचा था। ये दोनों ही अद्भुत ग्रन्थ संस्कृतमें ही हैं। इस सभाष्य "श्रीराष्ट्रालोकके" निर्माणके समय जिस मानव शरीरको धारण किया उसका नाम आचार्य श्रीअमृतवाग्भव है वैसे तो उस शरीरके और भी नाम हैं, किन्तु ग्रन्थ निर्माणमें यह नाम अधिक प्रसिद्ध है, इसी शरीरके द्वारा श्रेयःसाधनमें परमोपयोगी "श्रीआत्म-विलास" नामक सुन्दरतम आध्यात्मिक ग्रन्थका निर्माण भी हुआ है। उस "श्रीआत्मविलास" पर संक्षिप्त सरल हिन्दी भाषामें "श्रीसुन्दरी" नामक व्याख्या भी इसी शरीरके द्वारा लिखी गयी थी वत्स! तुमने तो उसको भली भांति पढ़ा ही है। अब तुम उस "श्री-राष्ट्रालोकका" यथावत् अध्ययन करो। इससे तुम सम्पूर्ण मानवोंको तथा सम्पूर्ण भूतमात्रको सुखी कर सकोगे। यह ग्रन्थ संसारके प्रेयः-साधनमें परमोपयोगी तो है ही, साथ ही परम्परया श्रेयःसाधनमें भी परमोपयोगी सिद्ध होगा"।

गुरुकी इस आज्ञाको सुन कर शिष्यने "श्रीराष्ट्रालोकका" सम्यक् अध्ययन किया। अनन्तर संस्कृतसे अनभिज्ञ लोकोंके उपकारके लिये हिन्दी भाषामें उसका अनुवाद किया। पश्चात् एक सुन्दर शुभ दिनमें

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

इस साऽनुवाद "श्रीराष्ट्रालोक"को शिष्य सुनाने लगा।

शिष्य—"सम्पूर्ण संसार कल्पनाप्रसूत है यह बात निश्चित है। किन्तु कल्पनाको आत्मसमागम कब हुआ, तथा उसने इस महान् संसार-रूपी गर्भको कब धारण किया और इसका प्रसव किस समय हुआ, इन सभी बातोंका विवरणपत्र उस सच्चिदानन्दकन्दके ही पास वर्त्तमान है, इसी कारण कल्पित सभी नाम तथा रूप सापेक्ष, अपूर्ण तथा परतन्त्र हैं। इन निरे अबोध बालकोंको उस आदिजननी कामकला श्रीराजराजेश्वरी-की कृपा होने पर ही आत्मैश्वर्यकी पूर्ण सिद्धि प्राप्त होती है।

इन नाम तथा रूपोंको अपने पूर्णस्वतन्त्र माता पिताकी स्वातन्त्र्यसम्पत्ति अधिकाराऽनुसार प्राप्त हुई है। कहना न होगा कि ये आत्मज जितनी अधिक तन्मयतासे मातापिताकी सेवा करते हैं, उतनी ही अधिक उन्हें ऐश्वर्यकी प्राप्ति भी होती है। अस्तु।

इन नाम तथा रूपोंमें काल्पनिक स्वातन्त्र्यके आधारपर समस्त व्यवहारकी स्थापना की गयी है। समस्त व्यवहारका आरम्भ तथा समाप्ति परिपूर्ण स्वातन्त्र्यमें ही निहित है। अत एव पारतन्त्र्यका उद्देश रखने वालोंको पारतन्त्र्यकी और स्वातन्त्र्यका उद्देश रखने वालोंको स्वातन्त्र्य की प्राप्ति होना स्वभावसिद्ध वस्तुस्थिति है। अन्तर्मुखतासे "स्व"की तथा बहिर्मुखतासे "पर"की कल्पना प्रकट होती रहती है। इसी लिये "स्व" की ओर जाने वाले स्वतन्त्र, तथा "पर" की ओर जाने वाले परतन्त्र हो जाते हैं। स्वातन्त्र्यप्रिय प्राणी आर्यस्वभाव होता है। वह दैवी सभ्यता-की रक्षाके लिये ही आविर्भूत होता है। उसे भली प्रकार विदित है कि आसुरी सभ्यता किसीका भी हित नहीं कर सकती। असुरोंके अत्यधिक

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

कष्ट देने पर भी वह सर्वदा उनके कल्याणकी ही कामना करता है। वह अपने स्वभावको छोड़ नहीं सकता । आसुरी सभ्यताको रुचिकर तथा हितकर मानने वाले कभी भी स्वातन्त्र्यप्रिय नहीं हो सकते । इसीसे संसारमें वे अनार्य माने जाते हैं । वे भले ही हठात् अपनेको आर्य कहलानेका प्रयत्न करें, किन्तु वे वास्तवमें अनार्य ही हैं।

इन्हीं दो सभ्यताओंका निरन्तर परस्पर सङ्घर्ष लगा रहता है। इन दोनोंके शासनके प्रकार भी भिन्न भिन्न ही रहते हैं। अनार्य शासन संसारमें दुःख शोक अशान्ति आदिकी ही सृष्टि कर सकता हैं। अधिक क्या, अशान्तिके लिये ही इनकी सृष्टि की गयी है। अनार्य शासनके मुख्यतया दो प्रकार हैं, एक 'व्यक्तिशासन' तथा दूसरा 'सङ्घ शासन'। 'व्यक्तिवाद'के अनुयायी अत्यधिक अशान्ति तथा 'सङ्घवाद' के अनुयायी आपेक्षिक थोड़ी अशान्ति प्रसुत करते हैं। इन दोनों ही प्रकारके शासनों में शान्तिका आदर नहीं किया जाता। इसी कारण इन शासनोंसे शान्ति अप्रसन्न हो शाप दे कर इन्हें शीघ्र नष्ट कर डालती है। वास्तवमें देखा जाए तो ज्ञात होता है कि अनार्योंको भी अशान्तिकी उपादित्सा नहीं होती, उपादित्सा तो उन्हे भी शान्तिकी ही होती है । परन्तु वे बहिर्मुख होनेके कारण कल्पित नाम रूपोंमें ही शान्तिको ढूँढते हैं, और वह मार्ग सर्वथा विपरीत होनेके कारण अशान्तिको ही शान्तिके स्थानमें स्थापित कर बैठते हैं। दैवी सम्पत्तिके आगर्भ श्रीमान्, स्वातन्त्र्यप्रिय आर्य स्वभावतः अन्तर्मुख होते हैं, इसी कारण वे अधिक से अधिक अशान्तिका निवारण तथा शान्तिकी प्रतिष्ठा करनेमें सफल होते हैं। वास्तवमें आर्य शासन ही शान्तिकी प्रतिष्ठाका ज्ञान तथा सामर्थ्य रखता है । आर्य

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

शासनके भी प्रधानतया दो प्रकार हैं । एक "राज्यशासन" तथा दूसरा "राष्ट्रशासन" । राज्यवादके अनुयायी आर्य होनेके कारण थोड़ी बहुत शान्ति ही स्थापित करते हैं । फिर भी कुछ अशान्ति तो रह ही जाती है। यद्यपि अनार्योंकी अपेक्षया लाखों गुना अधिक शान्ति इन राज्यवादी आर्योंके शासनमें स्थिर होती है फिर भी पूर्ण शान्तिकी स्थापना राष्ट्रवादियोंके ही शासनमें सम्भावित है। कारण पूर्णरूपसे आर्य तो राष्ट्रवादी ही हो सकता है। अस्तु। यह "श्रीराष्ट्रालोक" 'राष्ट्रवाद' को लक्ष्य कर रचा गया है। इस विषयमें सुविस्तृत विवेचन "श्रीराष्ट्रसंजीवन" में किया गया है, पाठक वहीं पढ़ें ।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

* श्रीः *

श्रीराष्ट्रालोकः

राष्ट्रभाषाऽनुवादसहितः

ग्रन्थकी निर्विघ्न समाप्तिके लिये शिष्टाचारपरम्पराप्राप्त प्रारम्भमें मङ्गलाचरण तथा समस्त ग्रन्थका तात्पर्य बीजरूपसे सम्बोधित करनेके लिये तन्त्रसे पहली कारिका लिखी गयी है। वह इस प्रकार की है—

चतुर्णां पुरुषार्थानां हेतवे वृषकेतवे ॥
पितृपुण्यभुवे तस्मै स्वराष्ट्राय नमो नमः ॥१॥

[धर्म अर्थ काम तथा मोक्ष नामक चारों पुरुषार्थोंके साधन, पिता, पितामह आदि अपने पूर्वजोंके तथा अपने पुण्यके उत्पत्ति स्थान, अत्यन्त प्रसिद्ध वृषकेतु रूप स्वराष्ट्रको बारम्बार प्रणाम है ॥१॥]

अनुबन्धचतुष्टयके निरूपणके लिये दूसरी कारिका लिखी जा रही है—

राष्ट्रदृष्टिं नमस्यामो राष्ट्रमङ्गलकारिणीम् ॥
यया विना न पश्यन्ति राष्ट्रं स्वनिकटस्थितम् ॥२॥

[राष्ट्रका मङ्गल करने वाली राष्ट्रदृष्टिको हम नमस्कार करते हैं। जिस राष्ट्र दृष्टिके विना अपने पास ही रहने वाले भी राष्ट्रको नहीं देखते हैं ॥२॥]

राष्ट्र किसको कहना चाहिये तथा उसका विभाग कैसे हो सकता है—

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

समानसंस्कृतिमतां यावती पितृपुण्यभूः ॥
तावतीं भुवमावृत्य राष्ट्रमेकं निगद्यते ॥३॥

[समान संस्कृति वाले लोगोंकी जितनी पितृपुण्यभूमि होती है, उतनी भूमिको घेर कर एक 'राष्ट्र' कहा जाता है ॥३॥]

किस राष्ट्र पर किन लोगोंका अपनापन होता है तथा किन का नहीं—

पितृपुण्यभुवं राष्ट्रं यन्मन्यन्ते च ये नराः ॥
तेषां नराणां राष्ट्रं तत्स्वीयं भवति सर्वथा ॥४॥

[जो लोग जिस राष्ट्रको सभी प्रकारसे पितृभूमि तथा पुण्यभूमि मानते हैं, वह राष्ट्र उन लोगोंका सभी प्रकारसे अपना होता है ॥४॥]

पितृभूत्वं पुण्यभूत्वं द्वयं यस्य न विद्यते ॥
तस्य स्वत्वं तत्र राष्ट्रे भवितुं न किलाऽर्हति ॥५॥

[जिस पुरुषके जिस राष्ट्रमें पितृभूत्व तथा पुण्य भूत्व दोनों नहीं होते उस पुरुषका उस राष्ट्रमें अपनापन नहीं होता, यही निर्णय है ॥५॥]

किस प्रकारका राष्ट्र सुखकर होता है ?—

पुमर्थसाधनं तद्वत् पुमर्थफलदायकम् ॥
यदि स्वतन्त्रं स्वं राष्ट्रं नाऽन्यथा मङ्गलप्रदम् ॥६॥

[यदि स्वराष्ट्र स्वतन्त्र हो तभी चारों पुरुषार्थोंका साधन तथा चारों पुरुषार्थोंको देने वाला होता है, अन्यथा (परतन्त्र होने पर) वह मङ्गल देने वाला नहीं होता, प्रत्युत अमङ्गल देने वाला ही हो जाता है ॥६॥]

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

किस राष्ट्रका अपमान होता है ?—

यस्य राष्ट्रस्य कोपो वा प्रसादो वा निरर्थकः ॥
तद्राष्ट्रमवमन्यन्ते पतिं षण्ढं यथा स्त्रियः ॥७॥

[उस राष्ट्रका लोक अपमान करते हैं, जिस राष्ट्रका कुपित होना या प्रसन्न होना निरर्थक होता है। जैसे नपुंसक पतिका स्त्रियां अपमान करती हैं ॥७॥]

राष्ट्रियोंके दौर्भाग्यके क्या कारण हैं ?—

दरिद्रास्तेऽतिदुर्भाग्या रोगैस्ते समभिप्लुताः ॥
येषां नराणां सा राष्ट्रहितदृष्टिर्न विद्यते ॥८॥

[राष्ट्रका हित करने वाली वह दृष्टि जिन पुरुषोंको नहीं होती वे पुरुष दरिद्री अति दुर्भाग्य तथा रोगोंसे घिरे होते हैं ॥८॥]

अधम मानव कौन से होते हैं ?—

मानवानां कुले जन्म लब्ध्वा यैरर्जिता न हि ॥
राष्ट्रदृष्टिः पुच्छहीनाः कोलास्ते गूथभक्षिणः ॥९॥

[मनुष्योंके वंशमें जन्म पा कर भी जिन्होंने वह राष्ट्रदृष्टि नहीं पाई, वे विष्ठा भक्षण करने वाले विना पूँछके शूकर हैं ॥९॥]

ग्रस्तं राष्ट्रग्रहपतिं दुष्टाऽराष्ट्रियराहुणा ॥
राष्ट्रदृष्टिविहीनास्तु कथं पश्यन्तु कौशिकाः॥१०॥

[दुष्ट अराष्ट्रियरूपी राहुसे ग्रसे हुए राष्ट्ररूपी ग्रहपति सूर्यको राष्ट्रदृष्टिसे रहित (अन्धे) उल्लू किस प्रकार देखें ॥१०॥]

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

राष्ट्रपतनमें क्या कारण होते हैं ?—

अराष्ट्रियकराऽऽक्रान्तं तद् राष्ट्रं जायते ध्रुवम् ॥
यत्र राष्ट्रे वर्त्तमानाश्चाण्डाला राष्ट्रघातिनः॥११॥

[जिस राष्ट्रमें राष्ट्रघाती चाण्डाल जीवित रहते हैं वह राष्ट्र अराष्ट्रियोंके करोंसे आक्रान्त हो जाता है। यह निश्चय है ॥११॥]

पारतन्त्र्यस्य निगडं दृढ़ीकुर्वन्ति ते नराः ॥
ये राष्ट्रार्थं न जानन्ति मर्त्तुमात्मविरोधिनः ॥१२॥

[जो लोग राष्ट्रके लिए मरना नहीं जानते वे परतन्त्रताकी बेड़ीको सुदृढ़ करने वाले अपने ही शत्रु हैं ॥१२॥]

स्वमङ्गलसमाशंसी यः स्वराष्ट्रमुपेक्षते ॥
स बुभुक्षानिवृत्त्यर्थं विषमेवात्ति केवलम्॥१३॥

[अपना कल्याण चाहने वाला जो पुरुष अपने राष्ट्रकी उपेक्षा करता है भूखको मिटानेके लिये निश्चयसे वह विष खा रहा है ॥१३॥]

द्रुह्यन्ति ये स्वराष्ट्राय कामयन्ते च मङ्गलम् ॥
पोतच्छिदो विनश्यन्ति यथा सिन्धुं तितीर्षवः ॥१४॥

[अपने राष्ट्रके साथ तो द्रोह करते हैं पर चाहते हैं कि हमारा मङ्गल हो, वे पुरुष समुद्रके पार जानेकी इच्छा रख कर पोत (समुद्री जहाज़) को तोड़ डालने वालोंके समान नष्ट हो जाते हैं ॥१४॥]

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

राष्ट्रशिक्षाका महात्म्य क्या है?—

राष्ट्रस्योत्थानपतने राष्ट्रियानवलम्ब्य हि ॥
भवतस्सर्वदा तस्माच्छिक्षणीयास्तु राष्ट्रियाः ॥१५॥

[राष्ट्रका उत्थान तथा पतन राष्ट्रियोंके ऊपर ही अवलम्बित है, अत एव राष्ट्रिय सर्वदा शिक्षासम्पन्न होने चाहियें ॥१५॥]

स्वराष्ट्रशिक्षां गृह्णीयाच्चिकीर्षुः स्वां समुन्नतिम् ॥
दूरदृष्टिर्यया भूत्वा न कदाऽपि विषीदति ॥१६॥

[अपनी अच्छी प्रकारकी उन्नति चाहने वाला पुरुष स्वराष्ट्रशिक्षा ग्रहण करे जिस स्वराष्ट्रशिक्षासे दूरदृष्टि हो कर कभी भी खेद नहीं करता ॥१६॥]

सदाऽऽचरन्तः कार्याणि राष्ट्रशिक्षाञ्जनाऽञ्जिताः ॥
इहाऽमुत्र च सौभाग्यं प्राप्नुवन्ति नरोत्तमाः॥१७॥

[राष्ट्रशिक्षारूपी अञ्जनको आंखोंमें आँज कर सर्वदा कार्य करने वाले नरश्रेष्ठ इस लोकमें तथा उस लोकमें भी सौभाग्य प्राप्त करते हैं ॥१७॥]

राष्ट्रियज्ञानसम्पन्नान् पुरुषानवलम्ब्य ये ॥
समाचरन्ति कार्याणि दुःखान्तं यान्ति तेऽपि वै ॥१८॥

[जो लोग राष्ट्रियज्ञानसम्पन्न पुरुषोंका आश्रय ले कर कार्योंको अच्छी प्रकार करते हैं, उनका भी दुःख अवश्य ही नष्ट हो जाता है ॥१८॥]

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

राष्ट्रियज्ञानहीनानां राष्ट्रियद्वेषिणां तथा ॥
गर्तपातं विहायैकं न किञ्चिदपि विद्यते ॥१६॥

[राष्ट्रियज्ञानसे हीन तथा राष्ट्रियोंके साथ द्वेष करने वालोंको गढ़ेमें गिरना छोड़ कर और कुछ भी लाभ नहीं होता ॥१६॥]

भुक्तिमुक्तिप्रदं राष्ट्रं नरो यो नाऽवमन्यते ॥
सर्वसम्पन्निधानानि लभतेऽसौ महायशाः ॥२०॥

[अधिकसे अधिक सुखभोग तथा स्वातन्त्र्यको देने वाले राष्ट्रका जो नर अपमान नहीं करता वह महान् कीर्तिशाली पुरुष सम्पूर्ण सम्पदाओंके निधानोंको प्राप्त करता है ॥२०॥]

यस्मिन्राष्ट्रे न विद्यन्ते राष्ट्रियज्ञानशिक्षकाः ॥
आशु नश्यति तद्राष्ट्रं भुजङ्गो निर्विषो यथा ॥२१॥

[जिस राष्ट्रमें राष्ट्रियज्ञानके शिक्षक विद्यमान नहीं होते वह राष्ट्र निर्विष साँपके समान शीघ्र नष्ट हो जाता है ॥२१॥]

स्वतन्त्र राष्ट्र कौन से समझने चाहिये ?—

परराष्ट्रस्य सम्बन्धः सेना कोषश्च सर्वथा ॥
यत्र हस्ते राष्ट्रियाणां स्वतन्त्रं राष्ट्रमस्ति तत् ॥२२॥

[परराष्ट्रका सम्बन्ध, सेना, और कोष सब प्रकारसे जिस राष्ट्रमें राष्ट्रियोंके हाथमें होता है वह राष्ट्र स्वतन्त्र है ॥२२॥]

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

स्वतन्त्रमेतत्त्रयं स्याद्यत्र राष्ट्राणि तानि तु ॥
राष्ट्रसंख्यां हि गच्छन्ति कर्षन्ति च महद्यशः ॥२३॥

[जिन राष्ट्रोंमें ये तीनों वस्तुएँ स्वतन्त्र होती हैं, वे ही राष्ट्र राष्ट्रोंकी गणनामें आते हैं। तथा महान् यशको अपनी ओर खींचते हैं ॥२३॥]

भाषाएँ किस क्रमसे सीखनी चाहियें ?—

मनुष्यमात्रः स्वामादौ राष्ट्रभाषां ततोऽभ्यसेत् ॥
ततो धर्म्यग्रन्थभाषां ततोऽन्या राष्ट्रपोषिणीः ॥२४॥

[सभी मनुष्य अपनी भाषा (मातृभाषा) को सबसे पूर्व पढ़ें, तदनन्तर राष्ट्रभाषाका अभ्यास करें। उसके पश्चात् धर्म्यग्रन्थभाषाका, तदनन्तर राष्ट्रको पोषण करने वाली अन्यान्य भाषाओंका अभ्यास करें ॥२४॥]

इन भाषाओंके अभ्यासमें भी राष्ट्रभाषाका अध्ययन अत्यावश्यक है—

राष्ट्रभाषा शिक्षणीयाऽवश्यं राष्ट्रहितैषिणा ॥
स्थविरेणाऽपि सा पूर्णं हितं तस्य विधास्यति ॥२५॥

[राष्ट्रहितैषी बूढ़ा हो गया हो तो भी राष्ट्रभाषा अवश्य सीखे, वह राष्ट्रभाषा सीखने वालेका हित अवश्य पूर्ण करेगी ॥२५॥]

शिक्षाके लिये क्या क्या करना चाहिये ?—

प्रतिग्रामं पाठशाला स्थापनीया प्रयत्नतः ॥
राष्ट्रभाषां धर्म्यभाषां बालकान्पाठयेद् गुरुः ॥२६॥

[प्रत्येक ग्राममें पाठशाला स्थापित करनी चाहिए। गुरु बालकोंको राष्ट्रभाषा तथा धर्म्यभाषा पढ़ाए ॥२६॥]

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

मण्डले मण्डले स्थाप्य एको विद्यालयो महान् ॥
विशुद्धवाताऽऽवरणे विजने वनशोभिनि ॥२७॥

[सभी प्रकारसे विशुद्ध वातावरण वाले एकान्त तथा वनसे सुशोभित स्थानमें प्रत्येक मण्डलमें एक महान् विद्यालय स्थापित करना चाहिये ॥२७॥]

पूर्णाष्टवर्षका बालाः पठेयुर्ब्रह्मचारिणः ॥
संरक्षिता भिषग्वर्यैराविंशत्यब्दपूरणात् ॥२८॥

[उन विद्यालयोंमें बीस वर्ष वय (आयु) पूर्ण होने पर्यन्त वे बालक ब्रह्मचर्य व्रत धारण करके पढ़ें, जिनके वयके आठ वर्ष पूर्ण हुए हों तथा श्रेष्ठ वैद्योंसे वे संरक्षित हों ॥२८॥]

अतीतचतुरब्दानामाष्टमाब्दप्रपूरणात् ॥
ग्रामीणपाठशालायां बालानां पाठनं हितम् ॥२९॥

[जिनके वयके चार वर्ष पूर्ण हो चुके हैं उन बालक तथा बालिकाओंको गांवकी पाठशालामें पढ़ाना हित कर है ॥२९॥]

विशुद्धचरिता वृद्धा आष्टमाब्दान्तमेव तु ॥
एकत्र बालिकाबालान् पाठयेयुस्ततो न हि ॥३०॥

[आठ वर्ष वय पूर्ण होने पर्यन्त ही बालक तथा बालिकाओंको एक स्थानमें पढ़ाया जाए। आठ वर्षके उपरान्त नहीं। बच्चोंके अध्यापक स्त्रियां हों अथवा पुरुष, पर होवें वे वृद्ध तथा विशुद्धचरित्र ॥३०॥]

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

अपूर्णषोडशाब्दानां बालानां नैव शंसिताः ॥
युवानोऽध्यापकास्तेषां वृद्धाः सुचरिता हिताः ॥३१॥

[सोलह वर्ष वयके पूर्ण होने पर्यन्त उन बालकोंके अध्यापक जवान कथमपि योग्य नहीं होते। सुचरित्र तथा बूढ़े ही अध्यापक उनके लिये हितकर हो सकते हैं ॥३१॥]

वृद्धाभिः सुचरित्राभी राष्ट्रियाभिस्तु बालिकाः ॥
गृह्यराष्ट्रज्ञानकार्यदक्षाः कार्याः प्रयत्नतः ॥३२॥

बालिकाएं गृहसम्बन्धि ज्ञान तथा कार्योंमें और राष्ट्रसम्बन्धि ज्ञान तथा कार्योंमें प्रयत्नसे दक्ष बनाई जाएँ, उनकी अध्यापिकाएँ बूढ़ी सुचरित्र तथा राष्ट्रिय होनी चाहियें ॥३२॥]

स्थापनीयः प्रयत्नेन मण्डले मण्डले महान् ॥
विद्यालयोऽध्यापयितुं राष्ट्रियान् रणकौशलम् ॥३३॥

[राष्ट्रियोंको रणकौशल सिखानेके लिए मण्डल मण्डलमें प्रयत्न पूर्वक महान् विद्यालय स्थापित करना चाहिए ॥३३॥]

राष्ट्रबालक कैसे होने चाहियें ?—

विधातव्याः प्रयत्नेन रणनीतिविशारदाः ॥
संरक्षितब्रह्मचर्या यावन्तो राष्ट्रबालकाः ॥३४॥

[राष्ट्रके सम्पूर्ण बालकोंको उनके ब्रह्मचर्यका पूर्ण संरक्षण करते हुए प्रयत्नसे रणनीतिमें विशारद बनाया जाए ॥३४॥]

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

शक्तित्रयवतः शान्तान् विनीतान्समदर्शिनः ॥
अपि स्वरक्तदानेन निजराष्ट्रस्य पोषकान् ॥३५॥
राष्ट्रभाषाधर्म्यभाषाकुशलानर्थकोविदान् ॥
राष्ट्रकल्याणमिच्छन्तो रचेयू राष्ट्रबालकान् ॥३६॥

[राष्ट्रका कल्याण करनेकी इच्छा करने वाले नेता लोग राष्ट्र-बालकोंको तीनों शक्तियोंसे सम्पन्न, शान्त, नम्र, नीतिमें विशेष निपुण, समदर्शी, अपना रुधिर देकर भी राष्ट्रका पोषण करने वाले, राष्ट्रभाषा तथा धर्म्यभाषामें कुशल तथा अर्थकोविद बनायें ॥३५-३६॥]

राष्ट्रकी उन्नतिमें कौनसे साधन हैं ?—

राष्ट्रभाषाधर्म्यभाषापुस्तकालययोजना ॥
ग्रामे ग्रामे विधातव्या राष्ट्रियै राष्ट्रवर्धकैः ॥३७॥

[राष्ट्रकी उन्नति करने वाले राष्ट्रिय गाँव गाँवमें राष्ट्रभाषा तथा धर्म्यभाषाके पुस्तकालयोंकी योजना करें ॥३७॥]

ग्रामे ग्रामे विधातव्याः शोभना वाचनालयाः ॥
राष्ट्रपोषीणि पत्राणि प्रसार्याणि बहूनि च ॥३८॥

[गाँव गाँवमें सुन्दर वाचनालय बनाएँ, राष्ट्रके पोषक समाचारपत्र तथा सुविचारपत्र आदि पत्रोंका प्रसार भी करें ॥३८॥]

नवं नवं वाङ्मयं च रचयेद्राष्ट्रपोषणम् ॥
सर्वदा राष्ट्रभाषायां धर्म्यभाषामयं तथा ॥३९॥

[नये नये वाङ्मय (साहित्यका) निर्माण करें, वह वाङ्मय सर्वदा राष्ट्रपोषक हो, राष्ट्रभाषामें हो तथा धर्म्यभाषामय हो ॥३९॥]

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

प्रतिग्रामं विधातव्या राष्ट्रज्ञानस्य शोभनाः ॥
प्रचारिण्यः परिषदो राष्ट्रोन्नतिचिकीर्षुभिः ॥४०॥

[राष्ट्रकी उन्नतिकी इच्छा करने वाले पुरुष प्रत्येक ग्राममें राष्ट्रज्ञानका प्रचार करने वाली सुन्दर परिषदों का निर्माण करें ॥४०॥]

तेषु तेषु च पर्वसु पर्वमाहात्म्यकोविदाः ॥
पर्वेतिहासं सम्पूर्णं श्रावयेयुः स्वराष्ट्रियान् ॥४१॥

[पर्वमाहात्म्यके कोविद पुरुष उन उन पर्वोंमें पर्वके सम्पूर्ण इतिहासको अपने राष्ट्रियोंको सुनाएँ ॥४१॥]

कृषाणा जलहारिण्यो गोपाला अपि यत्नतः ॥
राष्ट्रज्ञानेषु निपुणाः कार्या राष्ट्रहितैषिभिः ॥४२॥

[राष्ट्रहितैषी पुरुष किसानोंको पनिहारियोंको, और ग्वालोंको भी प्रयत्नसे राष्ट्रके ज्ञानोंमें निपुण बनाएँ ॥४२॥]

नरा नार्यश्च यत्र स्यू राष्ट्रज्ञानविचक्षणाः ॥
अराष्ट्रियास्तु तद्राष्ट्रं प्रभवन्ति न शासितुम् ॥४३॥

[जिस राष्ट्रमें वहांके पुरुष तथा स्त्रियां दोनों ही राष्ट्रज्ञानमें विचक्षण होते हैं, उस राष्ट्र पर अराष्ट्रिय लोग शासन नहीं कर सकते ॥४३॥]

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

राष्ट्रनेताका क्या कर्तव्य है—

राष्ट्रनेता राष्ट्रभाषां धर्मग्रन्थान् विशेषतः ॥
समभ्यस्येदर्थकाममोक्षशास्त्राणि तत्त्वतः ॥४४॥

[राष्ट्रनेताको राष्ट्रभाषाका तथा धर्मग्रन्थोंका विशेष रूपसे सम्यक् अभ्यास करना चाहिये । अर्थशास्त्र कामशास्त्र तथा मोक्षशास्त्रोंका तात्त्विक दृष्टिसे उत्तम प्रकारसे अभ्यास करना चाहिये ॥४४॥]

राष्ट्रपरिषत्की स्थापना—

महती राष्ट्रपरिषत् स्थापनीया तु राष्ट्रियैः ॥
पूर्वोक्तलक्षणास्तत्र विनयोज्याः सभासदः ॥४५॥

[राष्ट्रिय लोक बड़ी राष्ट्रपरिषत् स्थापित करें तथा उस परिषद्में पूर्ववर्णित लक्षणों वाले सभासदोंकी नियुक्ति करें ॥४५॥]

वृत्तिं समुचितां दत्त्वा राष्ट्रकार्याणि कारयेत् ॥
संयोजयति कार्येषु सा हि गौरवकारिणी ॥४६॥

[वह राष्ट्रपरिषद् समुचित वृत्ति दे कर राष्ट्रकार्योंको कराये । समुचित वृत्ति गौरव स्थापित करके कार्योंके करनेमें अच्छी प्रकार राष्ट्रियोंको समाहित करती है यह निश्चित है ॥४६॥]

वृत्तिप्रशंसा तथा भृतिनिन्दा—

गृहीत्वा वृत्तिमुचितां कुर्युः कार्याणि राष्ट्रियाः ॥
राष्ट्रियाणां राष्ट्रसेवाराष्ट्रमाहात्म्यकोविदाः ॥४७॥

[राष्ट्रसेवा तथा राष्ट्रमाहात्म्यके कोविद राष्ट्रिय उचित वृत्ति ले कर राष्ट्रियोंके सम्पूर्ण कार्योंको करें ॥४७॥]

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

भृतिं गृहीत्वा कार्याणि न कुर्युर्जातु राष्ट्रियाः ॥
कुरुते सा नरं नूनं राष्ट्रकार्यबहिर्मुखम् ॥ ४८ ॥

[राष्ट्रिय लोक भृति ले कर कदाचित् भी कार्योंको न करें। वह भृति नरको निश्चयसे राष्ट्रकार्यसे बहिर्मुख कर डालती है ॥४८॥]

भृति तथा वृत्तिमें भेद है—

भृतिरन्या वृत्तिरन्या भृतिर्ग्राह्या न राष्ट्रियैः ॥
भृतिं गृह्णन्ति ते भृत्या निर्दिश्यन्ते न वृत्तिलाः ॥४९॥

[भृति और वृत्ति दोनों अलग ही अलग हैं। राष्ट्रिय लोक भृति न ग्रहण करें भृति लेने वाले भृत्य कहे जाते हैं और वृत्ति लेने वाले भृत्य नहीं कहे जाते ॥ ४९ ॥]

सम्पूर्ण राष्ट्रियोंका वृत्ति पानेमें अधिकार है—

वृत्तियुक्ता विधातव्या राष्ट्रिया राष्ट्रनेतृभिः ॥
राष्ट्रियाणां समस्तानां राष्ट्रे स्वत्वेन जन्मतः ॥५०॥

[राष्ट्रके नेता राष्ट्रियोंको वृत्तियुक्त बनाएँ। कारण राष्ट्रमें समस्त राष्ट्रियोंका जन्मसे ही अपनापन होता है ॥ ५० ॥]

लँगड़े लूले अन्धोंकी व्यवस्था—

पङ्ग्वन्धबधिराऽशक्ता रोगिणो राष्ट्रियास्तु ये ॥
तेभ्योऽपि वृत्तिर्दातव्या राष्ट्रे तेषां निजत्वतः ॥५१॥

[पङ्गु, अन्धे, बहिरे, अशक्त, तथा रोगी जो भी राष्ट्रिय हैं उन सभीको वृत्ति देनी चाहिये। कारण राष्ट्रमें उनका स्वत्व है ॥ ५१ ॥]

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

यथाशक्ति च तेभ्योऽपि राष्ट्रकार्याणि कारयेत् ॥
नानाविधानि शिल्पानि तेषां योग्यानि शिक्षयेत् ॥५२॥

[उनकी शक्तिके अनुसार (राष्ट्रपरिषत्) उनसे भी कार्यों-को कराए, तथा उनके योग्य नाना प्रकारके शिल्प भी उनको सिखलाए ॥ ५२ ॥]

भिक्षाशी कौनसे दण्डनीय होने चाहियें—

भिक्षाशिनो दण्डनीया विहायाऽऽत्मविचारिणः ॥
अदम्भिनो बुद्धिमतो राष्ट्रसेवापरायणान् ॥५३॥

[आत्मविचारमें लगे हुए, दम्भसे रहित, बुद्धिमान् तथा राष्ट्रसेवामें लगे हुए पुरुषोंको छोड़ कर भीख मांग खाने वालोंको दण्ड देना चाहिए ॥५३॥]

नानावेषाः शुद्धहृदो राष्ट्रिया राष्ट्रशिक्षिताः ॥
चाराः सर्वत्र संस्थाप्या अभृत्या राष्ट्रियैः शुभाः ॥५४॥

[राष्ट्रिय पुरुष सब स्थानोंमें 'चार' स्थापित करें। चार नानावेष, शुद्धहृदय, राष्ट्रिय, राष्ट्रशिक्षित, अभृत्य हों, सभी प्रकारसे वे शुभ होने चाहिएँ ॥५४॥]

विधेया योजना यत्नात् शीघ्रसन्देशहारिणी ॥
नैकयन्त्राऽऽविष्करणैरप्रमत्तैस्तु राष्ट्रियैः ॥५५॥

[शीघ्रसे शीघ्र सन्देश पहुंचानेकी यत्नसे योजना करें। इसके लिये राष्ट्रिय पुरुष अप्रमादी हो कर अनेक यन्त्रोंका आविष्कार करें ॥५५॥]

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

पन्थानः सुगमाः कार्या निर्भया दृढसेतवः ॥
जलस्थलाकाशगानि यानानि विविधानि च ॥५६॥

[सुगम, निर्भय, तथा दृढ़सेतु वाले मार्ग बनाए जाएँ । और जल स्थल तथा आकाशमें चलने वाले यानोंका निर्माण किया जाय ॥ ५६ ॥]

पशुचर भूमि आदिकी स्थापना—

प्रतिग्रामं पशुचरा भूमिः कार्या वनं तथा ॥
व्यायामशालाः कासाराः कुल्याः कूपाश्च वाटिकाः ॥५७॥

[प्रत्येक ग्राममें पशुचर भूमि, वन, व्यायामशाला, तालाव, कुल्या, कुए तथा उपवन स्थापित किये जायें ॥५७॥]

शासक कैसे होने चाहिएँ—

राष्ट्रियाः शासकाः स्थाप्या धर्मार्थज्ञानकोविदाः ॥
दयालवो लोभहीना नूनं राष्ट्रहितैषिभिः ॥५८॥

[राष्ट्रिय पुरुष ही धर्म तथा अर्थज्ञानमें कोविद, राष्ट्रिय, दयालु, तथा लोभहीन पुरुषोंको ही शासक बनायें ॥५८॥]

नियम बनाने वाले कैसे होने चाहियें—

राष्ट्रसञ्चालकान् राष्ट्रज्ञानिनो दूरदर्शिनः ॥
राष्ट्रयोगक्षेमचिन्ताकुशलाँस्तत्त्वदर्शिनः ॥५९॥
नियमानां विधानाय राष्ट्रोन्नतिविधायिनाम् ॥
राष्ट्रिया विनियुञ्जीरन्नुपधाभिः परीक्षितान् ॥६०॥

[राष्ट्रकी उन्नति करने वाले नियमोंके प्रणयनके लिए सभी प्रकारकी उपधाओंसे परीक्षित राष्ट्र संचालकोंको राष्ट्रिय पुरुष नियुक्त

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

करें। नियुक्त राष्ट्रसंचालक राष्ट्रज्ञानी, दूरदर्शी, राष्ट्रके योगक्षेमकी चिन्तामें कुशल तथा तत्त्वदर्शी हों ॥५६, ६०॥]

किन लोगोंके बनाये हुये नियम राष्ट्रका नाश कर देते ह—

निर्मान्ति यत्र नियमानाढ्या विषमदर्शिनः ॥
पीडितश्वासदग्धं तद्राष्ट्रमाशु प्रणश्यति ॥६१॥

[जिस राष्ट्रमें विषमदर्शी आढ्य नियमोंका निर्माण करते हैं वह राष्ट्र शीघ्र ही पीड़ितोंके श्वासोंसे जल कर सभी प्रकारसे नष्ट हो जाता है ॥६१॥]

न हीयते तथा राष्ट्रं शासके सत्यराष्ट्रिये ॥
अराष्ट्रिये॰ सति यथा नियमानां विधातरि ॥ ६२ ॥

[शासक अराष्ट्रिय होने पर भी राष्ट्रकी ऐसी हानि नहीं होती जैसी नियमोंके बनाने वाले अराष्ट्रिय होने पर होती है ॥ ६२ ॥]

राष्ट्रका नाश कौन करते हैं—

ये मानयन्ति नियमानराष्ट्रियकृतान् किल ॥
दुर्भगास्ते नाशयन्ति राष्ट्रमाशु कुबुद्धयः ॥६३॥

[अराष्ट्रियोंके वनाये हुए नियमोंका जो सम्मान करते हैं वे कुबुद्धि दुर्भग पुरुष राष्ट्रका शीघ्र ही नाश कर डालते हैं ॥ ६३ ॥]

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

कौनसे शासक अयोग्य होते हैं—

उत्कोचग्राहिणो राष्ट्रद्रोहिणो व्यसने रताः ॥
अराष्ट्रियाश्च भवितुं नार्हन्ति किल शासकाः ॥६४॥

[उत्कोच (घूंस) लेने वाले, राष्ट्रके साथ द्रोह करने वाले व्यसनी और अराष्ट्रिय शासक होने योग्य नहीं होते यह निश्चय है ॥ ६४ ॥]

राष्ट्रद्रव्यं राष्ट्रनाशे नियुञ्जाना महामदाः ॥
अराष्ट्रिया राष्ट्रभुजो राष्ट्रं नार्हन्ति शासितुम् ॥ ६५ ॥

[राष्ट्रके द्रव्यको राष्ट्रके नाशमें लगाने वाले, महान् अभिमानी, अराष्ट्रिय राष्ट्रको भोग्य समझने वाले राष्ट्रके शासनके योग्य नहीं हो सकते ॥६५॥]

स्रष्टारो नियमानां ये न कार्यास्ते तु शासकाः ॥
न भृत्यास्ते विधातव्या न च व्यापारकारिणः ॥६६॥

[नियम निर्माण करने वाले जो हों वे शासक न हों, वे भृत्य न हों तथा वे व्यापार करने वाले भी न हों ॥६६॥]

राष्ट्रका कल्याण चाहने वालोंका प्रधान कार्य क्या है—

अराष्ट्रियान् राष्ट्रभुजो राष्ट्रिया नीतिकोविदाः ॥
निःसारयेयुर्यत्नेन राष्ट्रकल्याणमीप्सवः ॥६७॥

[राष्ट्रका कल्याण चाहने वाले नीतिकोविद राष्ट्रिय प्रयत्नसे राष्ट्रके भोक्ता अराष्ट्रियोंको निकाल देवें ॥६७॥]

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

किस प्रकारके राष्ट्रमें सुख मिलता है तथा किसमें नहीं—

निर्धनोऽपि सुखं यायान्नूनं शासति राष्ट्रिये ॥
शासत्यराष्ट्रिये सौख्यं लभते धनिकोऽपि न॥६८॥

[शासक राष्ट्रिय हो तो निर्धन भी सुख प्राप्त कर सकेगा, यह निश्चय है। अराष्ट्रियके शासक होने पर धनी भी सौख्य नहीं प्राप्त कर सकता ॥६८॥]

अराष्ट्रियोंका शासन अतिशय निन्द्य है—

राष्ट्रिये शासति वरं तद्धालाहलभक्षणम् ॥
शासत्यराष्ट्रिये नाऽर्हं स्वर्गीयाऽमृतभोजनम् ॥६९॥

[शासक राष्ट्रिय हो तो हालाहलभक्षण भी श्रेष्ठ है, शासकके अराष्ट्रिय होने पर स्वर्गीय अमृतका भोजन भी योग्य नहीं है ॥६९॥]

अराष्ट्रियं मानयन्ति स्वप्रभुं येऽल्पबुद्धयः ॥
स्वप्नेऽप्युच्चारितं तेषां नाम पापाय जायते ॥७०॥

[अराष्ट्रियको जो लोक अपना प्रभु मानते हैं वे नीच बुद्धि वाले हैं। स्वप्नमें भी किया हुआ उनके नामका उच्चारण पाप उत्पन्न करता है ॥७०॥]

तुच्छ सुख चाहने वाले विद्वान् निन्दनीय हैं—

अस्वतन्त्रे वसन्तोऽपि राष्ट्रे गृहसुखार्थिनः ॥
भवन्ति पण्डिता ये ते नूनं रौरवगामिनः ॥७१॥

[परतन्त्र राष्ट्रमें रहते हुए भी जो घरगृहस्थीके सुखोंकी इच्छा रखते हैं, तथा अपनेको पण्डित समझते हैं वे निश्चय से रौरव नरकमें जाते हैं ॥७१॥]

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

अपण्डित कौन हैं—

अराष्ट्रियाः प्रयच्छन्ति वृतिं न इति मन्वते ॥
ये स्वराष्ट्रे वर्तमाना मूढास्ते पण्डिता न हि ॥७२॥

[जो अपने राष्ट्रमें रहते हुए भी अराष्ट्रिय हमें वृत्ति दे रहे हैं, ऐसा मानते हैं वे मूढ़ हैं पण्डित नहीं ॥७२॥]

अत्यन्त निन्द्य कौन हैं—

वर्तन्ते तु स्वराष्ट्रे ये सेवन्ते चाऽप्यराष्ट्रियान् ॥
तेषां दृष्ट्वा मुखं नूनं रौरवं नरकं व्रजेत् ॥७३॥

[रहते तो हैं अपने राष्ट्रमें और सेवा अराष्ट्रियोंकी करते हैं, उनका मुख देख कर अवश्यमेव रौरव नरक में जाएगा ॥७३॥]

अराष्ट्रियप्रार्थितं धिग्जीवनं जीवनं न तत् ॥
आकारभेदमात्रात्तत् किन्तु विण्मूत्रभक्षणम् ॥७४॥

[अराष्ट्रियोंसे प्रार्थित जीवन जीवन नहीं है उस जीवनको धिक्कार है उसका आकार ही केवल भिन्न है वैसे तो वह विष्ठा और मूत्रका ही भक्षण है ॥७४॥]

श्ववृत्तिसे मर जाना ही अच्छा है—

वरं प्राणपरित्यागो निरन्ने निर्जले स्थले ॥
श्ववृत्त्या जीवनं नैव वरं राष्ट्रहितैषिणाम् ॥७५॥

[राष्ट्रहितैषी पुरुषोंका निरन्न और निर्जल स्थानमें प्राण छोड़ देना श्रेष्ठ है किन्तु श्ववृत्तिसे जीवन करना अच्छा नहीं ॥७५॥]

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

आपसी युद्ध और अराष्ट्रियोंसे सहायतामें कौन सी बात अधिक हानिकर है—

राष्ट्रियाणां मिथोयुद्धं न तादृग्घानिकारकम् ॥
अराष्ट्रियसहायेन यथा राष्ट्रियदण्डनम् ॥७६॥

[अराष्ट्रियको सहाय बना कर राष्ट्रियको दण्ड देना जैसी हानि करता है वैसी हानि तो राष्ट्रियोंका आपसका युद्ध भी नहीं करता ॥७६॥]

मिथोयुद्धे राष्ट्रिया ये साहाय्यकमराष्ट्रियात् ॥
वाञ्छन्ति तेऽचिरादेव राष्ट्रं घ्नन्ति कुबुद्धयः ॥७७॥

[जो राष्ट्रिय पुरुष आपसी युद्धमें अराष्ट्रियसे साहाय्यकी इच्छा करते हैं वे कुबुद्धि पुरुष शीघ्र ही राष्ट्रका घात कर डालते हैं ॥७७॥]

कैसे न्यायाधीश नहीं होने चाहिएँ—

अराष्ट्रियाः प्राड्विवाका न कार्या जातु राष्ट्रियैः ॥
तेषां राष्ट्रे निर्ममत्वाद् भवन्ति धनहारिणः ॥७८॥

[राष्ट्रिय पुरुष अराष्ट्रियोंको प्राड्विवाक कभी न बनायें। राष्ट्रमें उनका ममत्व न होनेके कारण वे धनका अपहरण करने वाले ही होते हैं ॥७८॥

राष्ट्रकोषका निर्माण कैसे किया जाए—

आयतो दशमांशोऽपि प्रत्यब्दं प्रतिराष्ट्रियात् ॥
राष्ट्रकोषो विधातव्यो गृहीतो राष्ट्रचालकैः ॥७९॥

प्रत्येक राष्ट्रियसे प्रतिवर्ष उसकी आयसे दशमांश भी ले

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

कर राष्ट्रके चालक पुरुष राष्ट्रकोषका निर्माण करें ॥७६॥

व्यापारनियमादि कौन करे—

व्यापारनियमा मूल्यस्थापना शुल्कयोजना ॥
राष्ट्रियैरेव कर्तव्या राष्ट्रे तेषां निजत्वतः ॥८०॥

[व्यापारके नियम, मूल्यकी स्थापना, शुल्ककी योजना राष्ट्रिय ही करें, कारण राष्ट्रमें उनका अपनापन है ॥८०॥]

कौनसा राष्ट्र शीघ्र नष्ट हो जाता है—

वस्तु शक्योत्पत्ति राष्ट्रान्तरादायाति यत्र तत् ॥
नाशमाशु प्रयात्येव राष्ट्रमालस्यसंयुतम् ॥८१॥

[जो वस्तु जिस राष्ट्रमें उत्पन्न हो सकती है, वही वस्तु दूसरे राष्ट्रसे यदि आती हो तो वह राष्ट्र आलसी हो कर शीघ्र ही नष्ट होता है ॥८१॥]

भीख माँगनेसे स्वतन्त्रता कभी भी नहीं मिल सकती—

स्वातन्त्र्यं भिक्षया नैव कदाचिदपि लभ्यते ॥
योगक्षेमसमर्थैका राष्ट्रशक्तिः प्रभाविनी ॥८२॥

[भीख माँगकर कभी भी स्वतन्त्रता प्राप्त नहीं हो सकती। योग तथा क्षेममें प्रभाव वाली राष्ट्रशक्ति ही केवल समर्थ है, ऐसा निश्चय है ॥८२॥]

राष्ट्रकी प्रभाववाली तीनों शक्तियां सेवनीय हैं—

राष्ट्रकाली राष्ट्रलक्ष्मीस्तथा राष्ट्रसरस्वती ॥
सेवनीया प्रयत्नेन भोगमोक्षप्रदायिनी ॥८३॥

[राष्ट्रकाली, राष्ट्रलक्ष्मी और राष्ट्रसरस्वती भोग तथा मोक्ष देने वाली है, प्रयत्नसे इसकी सेवा करनी चाहिये ॥८३॥]

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

राष्ट्रघाती कौन हैं—

अराष्ट्रियकृतां क्रान्ति सहन्ते येऽल्पबुद्धयः ॥
शान्तिभङ्गभिया राष्ट्रे नूनं ते राष्ट्रघातिनः ॥८४॥

[शान्तिभङ्गके भयसे जो थोड़ी बुद्धिवाले पुरुष राष्ट्रमें अराष्ट्रियोंकी की हुई क्रान्तिको सहते हैं वे निश्चयसे राष्ट्र घाती हैं ॥८४॥]

शान्ति किसको कहते हैं—

यया शान्त्या पराधीनं राष्ट्रं भवति सा न हि ॥
शान्तिः किन्तु नितान्तं सा केवलं क्लीवता मता ॥८५॥

[जिस शान्तिसे राष्ट्र पराधीन होता है वह शान्ति नहीं वह तो केवल कायरता है ॥८५॥]

आर्य लोगोंसे निन्दित कौन हैं—

आक्रामन्त्यन्यराष्ट्राणि लोभोपहतबुद्धयः ॥
नूनं नरपिशाचास्ते भवन्त्यार्यविगर्हिताः ॥८६॥

[जो पुरुष दूसरे राष्ट्रों पर आक्रमण करते हैं वह निश्चय ही नरपिशाच हैं, उनकी बुद्धि लोभसे विनष्ट है, आर्य पुरुष उनको अत्यन्त निन्द्य मानते हैं ॥८६॥]

आर्य किनको कहते हैं—

निग्रहाऽनुग्रहाभ्यां ये निर्लोभाः समदर्शिनः ॥
समुन्नयन्ति संसारं त एवार्याः स्मृता बुधैः ॥८७॥

[जो निर्लोभ तथा समदर्शी पुरुष निग्रह और अनुग्रहसे संसारकी सम्यक् उन्नति करते हैं बुद्धिमान् लोक उन्हींको आर्य कहते हैं ॥८७॥]

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

कौनसे अनार्योंके कर्म हैं—

श्ववृत्त्या जीवनं राष्ट्रद्रोहोऽराष्ट्रियनेतृता ॥
आर्यैरेतत्त्रयं त्याज्यमनार्यैरेव सेव्यते ॥८८॥

[श्ववृत्तिसे जीवन, राष्ट्रका द्रोह, राष्ट्रियोंका नेतृत्व न होना अथवा अराष्ट्रियका नेतृत्व स्वीकार करना आर्योंको इन तीनों बातोंका त्याग करना चाहिये। इस त्रयीकी अनार्य ही सेवा करते हैं ॥८८॥]

क्रान्तिके दो प्रकार—

क्रान्तिरुक्ता द्विप्रकारा प्रथमा शान्तिदायिनी ॥
अशान्तिकारिणी चान्या पूर्वा श्रेष्ठा परा न हि ॥८९॥

[क्रान्ति दो प्रकारकी है उनमें पहली शान्ति देने वाली है, और दूसरी अशान्ति करने वाली है, इनमें पहली श्रेष्ठ है दूसरी नहीं ॥८९॥]

श्रेष्ठ क्रान्ति कौन सी है—

या क्रान्तिः क्रियते लोके दण्डनायाऽऽततायिनाम् ॥
सा शान्तिदायिनी श्रेष्ठा लोकद्वयशुभावहा ॥९०॥

[जो क्रान्ति आततायियोंको दण्ड देनेके लिये की जाती है, शान्ति देने वाली तथा दोनों लोकोंमें कल्याण प्राप्त कराने वाली वह श्रेष्ठ क्रान्ति है ॥९०॥]

दुष्ट क्रान्ति कौन सी है—

राष्ट्रान्तरेषु क्रियते दुष्टैः क्रान्तिरराष्ट्रियैः ॥
अशान्तिकारिणी दुष्टा सा लोकद्वयनाशिनी ॥९१॥

[दुष्ट अराष्ट्रियोंके द्वारा राष्ट्रान्तरोंमें जो क्रान्ति की जाती अशान्ति करने वाली इस लोक तथा परलोकका नाश करने वाली वह क्रान्ति दुष्ट है ॥९१॥]

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

आततायी क्यों होते हैं—

अराष्ट्रियैराक्रमणं प्रायो राष्ट्रान्तरेषु यत् ॥
क्रियते लोभतस्तस्माच्च भवन्त्याततायिनः ॥६२॥

[अराष्ट्रिय लोक राष्ट्रान्तरों पर जिस आक्रमणको करते हैं वह प्रायः लोभसे ही किया जाता है इसी कारण वे (अराष्ट्रिय) आततायी होते हैं ॥६२॥]

अराष्ट्रिय आततायी ही होते हैं—

सहस्रगुणवन्तोऽपि बुद्धिमन्तोऽप्यराष्ट्रियाः ॥
धनप्रभुत्वलोभेन भवन्त्येवाऽऽततायिनः ॥६३॥

[सहस्त्रों गुणोंसे युक्त हों बुद्धिमान् हों तो भी अराष्ट्रिय लोक धन और प्रभुत्वके लोभसे आततायी होते ही हैं ॥६३॥]

राष्ट्रका संरक्षण कौन नहीं कर सकते—

विचारमन्तरेणैव क्रान्तिं ये मन्वतेऽवराम् ॥
राष्ट्रस्य संरक्षणार्थं न जातु प्रभवन्ति ते ॥६४॥

[बिना विचार किये ही क्रान्तिको जो पुरुष निन्द्य मानते हैं राष्ट्रके संरक्षणके लिए वे पुरुष कभी भी समर्थ नहीं हो सकते ॥६४॥]

श्रेष्ठ क्रान्तिका आश्रय न करनेसे दुर्गति—

श्रेष्ठां क्रान्तिं नाश्रयन्ते ज्ञानतोऽज्ञानतोपि वा ॥
शतशो धिग्दुर्भगांस्ताँल्लोकद्वयविरोधिनः ॥६५॥

[ज्ञानसे अथवा अज्ञानसे भी जो पुरुष श्रेष्ठ क्रान्तिका आश्रय नहीं लेते, दोनों लोकोंका विरोध करने वाले तथा दुर्भग उन लोगोंको शतशः धिक्कार है ॥६५॥]

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

दुष्ट क्रान्ति करने वालोंकी निन्दा—

लोकद्वयीनाशनीयदुष्टक्रान्तिविधायिनः ॥
सहस्रवारं धिक्कारयोग्या रौरवभागिनः ॥६६॥

[दोनों लोकोंका नाश करने वाली, दुष्ट क्रान्तिके करने वाले पुरुष सहस्रों वार धिक्कारके योग्य होते तथा रौरव नरकको पाते हैं ॥६६॥]

आततायियोंके विनाशके लिए तथा राष्ट्रके संरक्षणके लिए चोरी तथा डाका भी श्रेष्ठ ही है—

आततायिविनाशाय क्रियेत क्रान्तिकारिभिः ॥
यदि चौर्यं न तच्चौर्यं शौर्यमेव हि तद्भवेत् ॥६७॥

[आततायियोंका विनाश करनेके लिये क्रान्तिकारी यदि चोरी करें तो वह चोरी नहीं है, वह तो शूरता ही है ॥६७॥]

राष्ट्रसंरक्षिणी श्रेष्ठा दस्युवृत्तिरपि स्मृता ॥
शूराणामपि वृत्तिर्न श्रेष्ठा सा राष्ट्रघातिनी ॥६८॥

[दस्युवृत्ति भी राष्ट्रसंरक्षिणी हो तो वह श्रेष्ठ ही कही गई है शूरोंकी वृत्ति भी राष्ट्रघात करने वाली हो तो वह श्रेष्ठ नहीं हो सकती ॥६८॥]

कौन सी शूरता परिणाममें नपुंसकता बनती है—

ये नरा विनिगृह्णन्ति श्रेष्ठक्रान्तिविधायिनः ॥
शौर्याऽभिमानिनां तेषां न शौर्यं क्लैब्यमेव तत् ॥६९॥

[श्रेष्ठ क्रान्ति करने वालोंका जो पुरुष विनिग्रह करते हैं शूरताका अभिमान रखने वाले उन पुरुषोंका वह शौर्य नहीं है वह तो नपुंसकपन है ॥६९॥]

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

धन्य पुरुष कौन हैं—

तर्पयन्ति स्वराष्ट्रं ये शोणितैरुन्निनीषवः ॥
धन्यास्ते कृतपुण्यास्ते वन्दनीयपदाम्बुजाः ॥१००॥

[उन्नतिकी इच्छा करने वाले जो पुरुष स्वराष्ट्रको रुधिरोंसे तृप्त करते हैं वे धन्य हैं वे पुण्यवान् हैं, उनके चरण कमल वन्दनीय हैं ॥१००॥]

पूर्व जन्मके थोड़े पुण्यके प्रभावसे स्वतन्त्र राष्ट्रियोंके कुलमें जन्म होता है—

स्वतन्त्रराष्ट्रियकुले जायन्ते सुभगा नराः ॥
ईषत्प्राग्भवपुण्येन कोऽपि नास्त्यत्र संशयः ॥१०१॥

[अच्छे भाग्य वाले पुरुष पूर्व जन्मके थोड़े से पुण्यसे स्वतन्त्र राष्ट्रियोंके कुलमें उत्पन्न होते हैं इसमें कोई संशय नहीं ॥१०१॥]

यदि परतन्त्रराष्ट्रियोंके कुलमें उत्पन्न पुरुष आततायियोंको दण्ड देने वाले हों तो वे ही अधिक श्रेष्ठ हैं—

तथाऽप्यनन्तजन्मात्तपुण्यपुञ्जेन जन्म ते ॥
अस्वतन्त्रकुले प्राप्य दण्डयन्त्याततायिनः ॥१०२॥

[तो भी अनन्त जन्मोंमें प्राप्त पुण्यराशिस वे सुभग पुरुष अस्वतन्त्रोंके कुलमें जन्म पा कर आततायियोंको दण्ड देते हैं ॥१०२॥]

श्रेष्ठतम पुरुष कौन से हैं—

दुष्टां क्रान्तिं चिकीर्षूणां भारेणाऽवनतां महीम् ॥
पालयन्ति महात्मानो दण्डयित्वाऽऽततायिनः ॥१०३॥

[दुष्ट क्रान्ति करनेकी इच्छा रखने वालोंके भारसे दबी पृथ्वीका आततायियोंको दण्ड दे कर महात्मा लोक पालन करते हैं ॥१०३॥]

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

आत्मघाती कौन हैं—

निघ्नन्ति ये स्वराष्ट्रं ते कथिता आत्मघातिनः ॥
न तेषां निष्कृतिः प्रोक्ता जन्मकोटिशतैरपि ॥१०४॥

[जो अपने राष्ट्रका घात करते हैं वे आत्मघाती कहे जाते हैं। सौ सौ कोटि जन्मोंसे भी उन पुरुषोंका उद्धार नहीं होता ॥१०४॥]

सबसे बड़े मूर्ख कौन हैं—

न स्वतन्त्रं स्वराष्ट्रं ये कर्तुमिच्छन्ति मानवाः ॥
ततोऽधिका महामूर्खाः सन्ति केऽत्र भुवस्तले ॥१०५॥

[जो मानव अपने राष्ट्रको स्वतन्त्र करनेकी इच्छा नहीं करते, इस पृथ्वीकी पीठ पर उनसे अधिक महान् मूर्ख कौन हो सकते हैं ॥१०५॥]

इस ग्रन्थके रहस्यको जाननेकी इच्छा रखने वालोंको क्या करना चाहिये—

ग्रन्थस्याऽस्य रहस्यं ये ज्ञातुं वाञ्छन्ति भावुकाः ॥
पठन्त्वात्मविलासं ते कामं जितसुधामदम् ॥१०६॥

[जो भावुक इस ग्रन्थके रहस्यको जानना चाहते हैं वे अमृतके अभिमानको जीतने वाले "श्रीआत्मविलास" ग्रन्थको यथेष्ट पढ़ें ॥१०६॥]

इस ग्रन्थके पढ़ने आदिसे स्वातन्त्र्य प्राप्त होता है—

समभ्यस्यन् ग्रन्थमिममाचरंश्च प्रचारयन् ॥
राष्ट्रविज्ञानकुशलः स्वातन्त्र्यं प्राप्स्यति ध्रुवम् ॥१०७॥

[जो पुरुष इस ग्रन्थका भली भांति अभ्यास पूर्वक इस पर आचरण करता हुआ इसका प्रचार भी करता है वह राष्ट्रविज्ञानकुशल हो कर निश्चय ही स्वातन्त्र्य प्राप्त करेगा ॥१०७॥]

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

दुष्टाऽराष्ट्रियपारतन्त्र्यनिगडच्छेदेन तोषावहो
राष्ट्रालोक उदारबुद्धिविषयः स्वातन्त्र्यदीक्षागुरुः ॥
ये संसारसमुन्नतिं हृदयतो वाञ्छन्ति तेषां कृते
आचार्याऽमृतवाग्भवेन रचितो ग्रन्थोऽयमस्त्यद्भुतः ॥१०८॥

[दुष्ट अराष्ट्रियोंके पारतन्त्र्यरूपी निगडको तोडकर सन्तोष देने वाले विशालबुद्धिसे ग्राह्य, स्वातन्त्र्य दीक्षाका गुरु, यह अद्भुत श्रीराष्ट्रालोक ग्रन्थ, जो पुरुष संसार की हृदयसे समुन्नति चाहते हैं उनके लिये आचार्य अमृतवाग्भवने बनाया ॥१०८॥]

इति श्री सर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामहिम आचार्य श्रीमदमृतवाग्भव-
प्रणीतो राष्ट्राभाषाऽनुवादसहितः श्रीराष्ट्रालोकः ।

——:o:——

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

अनुक्रमणिका

श्लोक	संख्या	श्लोक	संख्या
अतीतचतुरब्दानाम्	२६	दुष्टां क्रान्ति चिकीर्षूणाम्	१०३
अपूर्णषोडशाब्दानाम्	३१	दुष्टाराष्ट्रियपारतन्त्र्य	१०८
अराष्ट्रियकराक्रान्तम्	११	द्रुह्यन्ति ये स्वराष्ट्राय	१४
अराष्ट्रियकृतां क्रान्तिम्	८४	नवं नवं वाङ्मयं च	३६
अराष्ट्रियप्रार्थितम्	७४	नरा नार्यश्च यत्र स्युः	४३
अराष्ट्रियं मानयन्ति	७०	न स्वतन्त्रं स्वराष्ट्रं ये	१०५
अराष्ट्रियाः प्रयच्छन्ति	७२	न हीयते तथा राष्ट्रम्	६२
अराष्ट्रियाः प्राड्विवाकाः	७८	नानावेषाःशुद्धहृदः	५४
अराष्ट्रियान् राष्ट्रभुजो	६७	निग्रहानुग्रहाभ्यां ये	८७
अराष्ट्रियैराक्रमणम्	६२	निघ्नन्ति ये स्वराष्ट्रं ते	१०४
अस्वतन्त्रे वसन्तोऽपि	७१	नियमानां विधानाय	६०
आक्रामन्त्यन्यराष्ट्राणि	८६	निर्धनोऽपि सुखं यायात्	६८
आततायिविनाशाय	६७	निर्मान्ति यत्र नियमान्	६१
आयतो दशमांशोऽपि	७६	पङ्ग्वन्धबधिराशक्ताः	५१
उत्कोचग्राहिणो०	६४	पन्थानः सुगमाः कार्याः	५६
कृषाणा जलहारिण्यः	४२	परराष्ट्रस्य सम्बन्धः	२२
क्रान्तिरुक्ता द्विप्रकारा	८६	पारतन्त्र्यस्य निगडम्	१२
ग्रन्थस्यास्य	१०६	पितृपुण्यभुवं राष्ट्रम्	४
ग्रस्तंराष्ट्रग्रहपतिं	१०	पितृभूत्वं पुण्यभूत्वम्	५
ग्रामे ग्रामे विधातव्या	३८	पुमर्थसाधनं तद्वत्	६
गृहीत्वा वृत्तिमुचिताम्	५०	पूर्णाष्टवर्षका बालाः	२८
चतुर्णां पुरुषार्थानाम्	१	प्रतिग्रामं पशुचरा	५७
तथाप्यनन्त जन्मात्त०	१०२	प्रतिग्रामं पाठशाला	२६
तर्पयन्ति स्वराष्ट्रं ये	१००	प्रतिग्रामं विधातव्याः	४०
तेषु तेषु च पर्वसु	४१	भिक्षाशिनो दण्डनीयाः	५३
दरिद्रास्तेऽतिदुर्भाग्याः	८	भुक्तिमुक्तिप्रदं राष्ट्रम्	२०

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

दुष्टाऽराष्ट्रियपारतन्त्र्यनिगडच्छेदेन तोषावहो
राष्ट्रालोक उदारबुद्धिविषयः स्वातन्त्र्यदीक्षागुरुः ॥
ये संसारसमुन्नतिं हृदयतो वाञ्छन्ति तेषां कृते
आचार्याऽमृतवाग्भवेन रचितो ग्रन्थोऽयमस्त्यद्भुतः ॥१०८॥

[दुष्ट अराष्ट्रियोंके पारतन्त्र्यरूपी निगडको तोडकर सन्तोष देने वाले विशालबुद्धिसे ग्राह्य, स्वातन्त्र्य दीक्षाका गुरु, यह अद्भुत श्रीराष्ट्रालोक ग्रन्थ, जो पुरुष संसार की हृदयसे समुन्नति चाहते हैं उनके लिये आचार्य अमृतवाग्भवने बनाया ॥१०८॥]

इति श्री सर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामहिम आचार्य श्रीमदमृतवाग्भव-
प्रणीतो राष्ट्राभाषाऽनुवादसहितः श्रीराष्ट्रालोकः ।

——:o:——

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

अनुक्रमणिका

श्लोक	संख्या	श्लोक	संख्या
अतीतचतुरब्दानाम्	२६	दुष्टां क्रन्ति चिकीर्षूणाम्	१०३
अपूर्णषोडशाब्दानाम्	३१	दुष्टाराष्ट्रियपारतन्त्र्य	१०८
अराष्ट्रियकराक्रान्तम्	११	द्रुह्यन्ति ये स्वराष्ट्राय	१४
अराष्ट्रियकृतां क्रान्तिम्	८४	नवं नवं वाङ्मयं च	३६
अराष्ट्रियप्रार्थितम्	७४	नरा नार्यश्च यत्र स्युः	४३
अराष्ट्रियं मानयन्ति	७०	न स्वतन्त्रं स्वराष्ट्रं ये	१०५
अराष्ट्रियाः प्रयच्छन्ति	७२	न हीयते तथा राष्ट्रम्	६२
अराष्ट्रियाः प्राड्विवाकाः	६८	नानावेषाःशुद्धहृदः	५४
अराष्ट्रियान् राष्ट्रभुजो	६७	निग्रहानुग्रहाभ्यां ये	८७
अराष्ट्रियैराक्रमणम्	६२	निघ्नन्ति ये स्वराष्ट्रं ते	१०४
अस्वतन्त्रे वसन्तोऽपि	७१	नियमानां विधानाय	६०
आक्रामन्त्यन्यराष्ट्राणि	८६	निर्धनोऽपि सुखं यायात्	६८
आततायिविनाशथ	६७	निर्मान्ति यत्र नियमान्	६१
आयतो दशमांशोऽपि	७६	पङ्ग्वन्धबधिराशक्ताः	५१
उत्कोचग्राहिणो०	६४	पन्थानः सुगमाः कार्याः	५६
कृषाणा जलहारिण्यः	४२	परराष्ट्रस्य सम्बन्धः	२२
क्रान्तिरुक्ता द्विप्रकारा	८६	पारतन्त्र्यस्य निगडम्	१२
ग्रन्थस्यास्य	१०६	पितृपुण्यभुवं राष्ट्रम्	४
ग्रस्तंराष्ट्रग्रहपतिं	१०	पितृभूत्वं पुण्यभूत्वम्	५
ग्रामे ग्रामे विधातव्या	३८	पुमर्थसाधनं तद्वत्	६
गृहीत्वा वृत्तिमुचिताम्	५०	पूर्णाष्टवर्षका बालाः	२८
चतुर्णां पुरुषार्थानाम्	१	प्रतिग्रामं पशुचरा	५७
तथाप्यनन्त जन्मात्त०	१०२	प्रतिग्रामं पाठशाला	२६
तर्पयन्ति स्वराष्ट्रं ये	१००	प्रतिग्रामं विधातव्याः	४०
तेषु तेषु च पर्वसु	४१	भिक्षाशिनो दण्डनीयाः	५३
दरिद्रास्तेऽतिदुर्भाग्याः	८	भुक्तिमुक्तिप्रदं राष्ट्रम्	२०

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

भृतिं गृहीत्वा कार्याणि ४८
भृतिरन्या वृत्तिरन्या ४६
मण्डले मण्डले स्थाप्यः २७
मनुष्यमात्रः स्वामादौ २४
महती राष्ट्रपरिषत् ४५
मानवानां कुले जन्म ६
मिथो युद्धे राष्ट्रिया ये ७७
यथा शक्ति च तेभ्योऽपि ५५
यथा शान्त्या पराधीनम् ८५
यस्मिन् राष्ट्रे न विद्यन्ते २१
यस्य राष्ट्रस्य कोपो वा ७
या क्रान्तिः क्रियते लोके ६०
ये नरा विनिगृह्णन्ति ६६
ये मानयन्ति नियमान् ६३
राष्ट्रकाली राष्ट्रलक्ष्मीः ८३
राष्ट्रदृष्टिं नमस्यामः २
राष्ट्रद्रव्यं राष्ट्रनाशे ६५
राष्ट्रनेता राष्ट्रभाषाम् ४४
राष्ट्रभाषाधर्म्यभाषाकु० ३६
राष्ट्रभाषाधर्म्यभाषापु० ३७
राष्ट्रभाषा शिक्षणीया २५
राष्ट्रसंचालकान् ५६
राष्ट्रसंरक्षिणी श्रेष्ठा ६८
राष्ट्रस्योत्थानपतने १५
राष्ट्रान्तरेषु क्रियते ६१
राष्ट्रियज्ञानसम्पन्नान् १८
राष्ट्रियज्ञानहीनानाम् १६
राष्ट्रियाः शासकाः ५८
राष्ट्रियाणां मिथो युद्धम् ७६
राष्ट्रिये शासति वरं ६६
लोकद्वयीनाशनीय० ६६
वरं प्राणपरित्यागः ७५
वर्तन्ते तु स्वराष्ट्रे ये ७३
वस्तु शक्त्योत्पत्ति ८१
विचारमन्तरेणैव ६४
विधातव्याः प्रयत्नेन ३४
विधेया योजना यत्नात् ५५
विशुद्धचरिता वृद्धाः ३०
वृत्ति समुचितां दत्त्वा ४६
वृत्तियुक्ता विधातव्याः ५०
वृध्दाभिः सुचरित्राभिः ३२
व्यापारनियमाः ८०
शक्तित्रयवतः शान्तान् ३५
श्रेष्ठां क्रान्ति चिकीर्षूणाम् ६५
श्ववृत्त्या जीवनं ८८
सदाचरन्तः कार्याणि १७
समभ्यस्यन् ग्रन्थमिमम् १०७
समानसंस्कृतिमताम् ३
सहस्रगुणवन्तोऽपि ६३
स्थापनीयः प्रयत्नेन ३३
स्रष्टारो नियमानां ये ६
स्वतन्त्रमेतत् त्रयं स्यात् २
स्वतन्त्रराष्ट्रियकुले १०
स्वमङ्गलसमाशंसी १
स्वराष्ट्रशिक्षा गृह्णीयात्
स्वातन्त्र्यं भिक्षया नैव

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

* श्रीः *

श्रीपरशुरामस्तोत्र

राष्ट्रभाषाऽनुवादसहित सचित्र द्वितीय संस्करण।

यह एक अत्यन्त ओजस्विनी भाषामें लिखा हुआ भगवान् श्रीपरशुरामका स्तोत्र है। भारतके अनेकों पत्र-पत्रिकाओंने तथा विद्वानोंने इसकी मुक्त कण्ठसे प्रशंसा की है। मूल्य विश्वोद्धार

श्रीसप्तपदीहृदय

राष्ट्रभाषाऽनुवादसहित

भारतीय आर्य विवाहसंस्कारमें सप्तपदी नामक क्रिया कितनी सुन्दर एवं महत्त्व पूर्ण है, यह तो पाठकोंको विदित ही है।

किन्तु इस सप्तपदीका वास्तविक रहस्य आज तक किसी भी विद्वान् ने खोलकर नहीं लिखा। 'एकमिषे' इत्यादि वैदिक वाक्योंके यथार्थ-रहस्यको खोल कर भारतीय आदर्शके राष्ट्रिय रूपमें यह श्रीसप्तपदी-हृदय नामक ग्रन्थ लिखा गया है। विशेष क्या आदर्श दाम्पत्य जीवन-का तत्त्व इसमें भरा पड़ा है। मूल्य विश्वोद्धार

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

महामहिमआचार्यश्रीमदमृतवाग्भवप्रणीत

कुछ ग्रन्थरत्न

१. श्रीपरशुरामस्तोत्र—राष्ट्रभाषाऽनुवादसहित ।
द्वितीय संस्करण । मूल्य विश्वोद्धार

२. श्रीराष्ट्रालोक—राष्ट्रभाषाऽनुवादसहित ।
तृतीय संस्करण । मू० ॥)

३. श्रीआत्मविलास—"श्रीसुन्दरी" राष्ट्रभाषाभाष्यसहित ।
मू० २) रु०

४. श्रीसप्तपदीहृदय—राष्ट्रभाषाऽनुवादसहित ।
मू० विश्वोद्धार

५. श्रीसंक्रान्तिपञ्चदशी—राष्ट्रभाषागद्यपद्याऽनुवाद सहित ।
मू० ।)

६. श्रीमहानुभवशक्तिस्तव—संस्कृतव्याख्यासहित ।
(मुद्रालयमें है) ।

सभी पुस्तकोंके मिलनेका स्थान—
श्रीस्वाध्यायसदन
सोलन
(शिमला)

बालूजा प्रेस, फतेहपुरी, दिल्ली में मुद्रित ।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri